अकाल

(नेपाली कविता)

रचनाकारक परिचय

नाम	–	मेनका मल्लिक (अनुवादिका)
जन्म	–	18.06.1966 ई0
वृत्ति	–	गृहकार्य अतिरिक्त, कविता लेखन, अनुवाद आ सम्पादन। पाक्षिक–'दच्छिन मिथिला' एवं त्रैमासिक–औरतक सम्पादन।
मूल रचनाकार	–	रेमिका थापा
जन्म	–	28.10.1971
शिक्षा	–	एम.ए. पी–एच–डी
कृति	–	वेदना को पाछिल्तिर, गउँमा कविता, देश र अन्य कविता हरू आ किनारा का आवाज हरू।
वृत्ति	–	शिक्षण (परिमल मित्र स्मृति महाविद्यालय, मालबाजार, जलपाईगुड़ी)

□□□

अकाल

महिला सभ पानि भरऽ जाइछ
कतोक कोस दूर
इनारसँ पानि भरऽ जाइछ।
इजोत होयबाक ओर होइतहिं
अहलभोरे
पानि भरऽ जाइछ महिला सभ।

आँगन बहारि कऽ राखऽ पड़ैछ
ककरो अबैआ नहि छै, तैयो
सुखायल, कैल पात सभ खसल छै
आँगन भरि
खर-खर करैत कोना चलत
कोना टेकत पयर?

फट्टक भिड़ा कऽ राखऽ पड़तै
ककरो बेराम पति सूतल छै भीतर
ककरो शराबी पति सूतल छै भीतर।

कतेक चलऽ पड़ैत छै
तरबाक खिआयल रेखा सभसँ
कतेक निर्दयतापूर्वक

जमीन पर पयर टेकि
चलऽ पड़ैत छै लगातार
पनिभरनि सभक जमातकेँ।

सूखि कऽ हड़नठ भऽ गेलै नीमक गाछ
अकत तीत छाल उखड़ि
भीतरक रानीमासु समेत सुखा गेल छै
उदास बना देलकै आँगनकेँ
कोना झाँपी?
अकाल छै
अकालकेँ कोना झाँपत?
माथ झँपने पयर उघार, पयर झँपने माथ
चद्दरिकेँ कहुना तानि-तुनि मुँह झाँपय
अकालग्रस्त जिनगीक पहिल परिच्छेदकेँ
झाँपय।
तोहर नाँगट देहसँ उड़ि जयतह कतहु
आकांक्षाक चिड़ै।

अकालमे
दूर-दूर धरि पसरल छै
भूखक गन्ह
स्त्रीगण द्वारा छोड़ल

श्वास-प्रवास

स्त्रीगणक तरबाक जरि गेल चक्रक

मद्धिम गन्ह छै हबामे।

दूर-दूर धरि नहि छै आर कोनो गन्ह

अकास खसा देलक अछि.

रेति-रेति कऽ कटि

अपन सुखायल फेफड़ा

शून्यक विराट सिम्फॉनी छोड़ि

मोन होइए

अपने आँखिक नोनगर दहसँ

भरि आनी एक घैल पानि।

पानिक प्रतीक्षामे अछि

पिसायल बड़ेरी आ ओरिआनी

निपह-पोतह

क्षयग्रस्त पतिक कय-दस्तकें

धोअह-पखारह

एड्सग्रस्त पतिक ऐंठनकें

झाँपह....झाँपि कऽ राखह

अकाल छै।

शब्दार्थ

फट्टक भिड़ायब-फट्टक लगायब

बेराम-अस्वस्थ, बीमार

गन्ह-गन्ध

बड़ेरी- घरक देबाल पर मध्यमे एक देबालसँ दोसर देबाल धरि लकड़ी अथवा बाँस खण्ड जाहि पर सम्पूर्ण घरक दूनू चारक भार रहैत छै, बड़ेरी

ओरिआनी-देहरी आ आँगनक मिलन स्थल

क्षयग्रस्त- क्षय रोगसँ पीड़ित

ऐंठन-भोजनोपरांत बचल खाद्य पदार्थ

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) की सुखाकऽ हड़नठ भऽ गेलै?

(क) नीमक गाछ (ख) आमक गाछ (ग) गड़ुआक गाछ (घ) जामुनक गाछ

(ii) कतक रानीमासु सुख गेल छै?

(क) बाहरक (ख) भीतरक (ग) खेतक (घ) देहक

(iii) ककरा उदास बना देलकै?

(क) घरकेँ (ख) द्वारिकेँ (ग) आँगनकेँ (घ) ओलतीकेँ

(iv) तोहर नाँगट देहसँ कथीक चिड़ै उड़ि जयतह?

(क) आशाक (ख) इच्छाक (ग) मोनक (घ) आकांक्षाक

(v) कथीक गन्ह दूर-दूर धरि पसरल छै?

(क) भूखक (ख) पियासक (ग) उल्लासक (घ) उत्साहक

2. लघूत्तरीय प्रश्न

(i) महिलासभ की भरऽ जाइछ?

(ii) महिलासभ कथीसँ पानि भरऽ जाइछ?

(iii) महिलासभ कखन पानिभरऽ जाइछ?

(iv) केहन सुखायल पात खसल छै?

(v) जमीनपर पयर टेकि ककरा लगातार चलऽ पड़ैत छै?

3. रिक्त स्थानक पूर्ति करू-

(i) स्त्रीगणक.....जरि गेल चक्र।

(ii) .....खसा देल अछि।

(iii) अपन.....फेफड़ा।

(iv) शून्यक विराट.....छोड़ि।

(v) पिसायल.....आ ओरियानी।

4. स्तम्भ 'क' क शब्दक मिलान स्तम्भ 'ख' क उचित शब्दसँ करू-

'क'		'ख'	
(i)	इजोत होयबाक	(क)	कय दस्तकेँ
(ii)	आँगन	(ख)	तरबाक खिआयल रेखा सभसँ
(iii)	ककरो बेराम	(ग)	बेर होइतहिं
(iv)	कतेक चलऽ पड़ैत छै	(घ)	पति सूतल छै भीतर
(v)	क्षयग्रस्त पतिक	(ङ)	बहारि कऽ राखऽ पड़ैछ

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न

(i) महिला सभ कतोक कोस दूर पानि भरऽ किएक जाइछ?

(ii) महिलासभकेँ आँगन किएक बहारि कऽ राखऽ पड़ैछ?

(iii) किएक फट्टक भिड़ा कऽ राखऽ पड़तै?

(iv) पनिभरनी सभक जमातकेँ कोना चलऽ पड़ैत छै?

(v) नीमक गाछ केहन भऽ गेल अछि?

(vi) आँगनकेँ कोना उदास बना देलकै अछि?

(vii) केहन अकाल छै?

(viii) पानिक प्रतीक्षामे के सभ अछि?

(ix) कवयित्री कथीकेँ झाँपि कऽ राखबाक आग्रह कयलनि अछि आ किएक?

(x) अपने आँखिक नोनगर दहसँ
भरि आनी एक घैल पानि।
उक्त पाँतिक भावार्थ लिखू।

(xi) अकाल कविताक भावार्थ लिखू।

(xii) अकाल कविताक प्रासंगिकता की अछि?

□□□